इकाई -2 विशेष आवश्यकतावाले बच्चे (दिव्यांगजन) और समावेशी शिक्षा

* समावेशी शिक्षा में विशेष आवश्यकतावाले बच्चों का संदर्भ : ऐतिहासिक विकास, वर्तमान स्थिति, चुनौतियाँ, बिहार का संदर्भ

पश्चिमी देशों ने इस समाज के प्रति लोगों का ध्यान आकर्षित करने के लिए वर्ष 1980 को 'अंतरराष्ट्रीय विकलांग वर्ष' घोषित किया था। बाद में, हमारे देश की तत्कालिक प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी ने शिक्षाशास्त्रियों, मनोवैज्ञानिकों, विचारकों, सामाजिक कार्यकर्ताओं, कानूनविदों, एवं अनुसंधानकर्ताओं को विशिष्ट समाज के प्रति सोचने और उनके प्रति जागरूक करने की कोशिश की। उन्होंने 1981 को (विकलांग वर्ष) घोषित किया। साथ ही भारत सरकार विकलांग बच्चों के लिए विभिन्न योजनाएं भी चला रही थी। सन् 1986 में राष्ट्रीय शिक्षा नीति का गठन कराया और (समानता के लिए शिक्षा) नामक अध्याय में इन विशिष्ट वर्ग के बच्चों की शिक्षा, पुनर्वास एवं समाज के साथ उन्हें जोड़ने के लिए व्यवस्था की। मानव संसाधन मंत्रालय ने अशक्त बालकों को सामान्य वर्ग के बच्चों के साथ पढ़ने, सीखने एवं व्यवहार के हर पहलुओं में अच्छे तालमेल के लिए NCERT को राष्ट्रीय स्तर पर एक योजना तैयार करने का निर्देश दिया। भारत

Scanned by CamScanner

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

सरकार ने देशभर के सभी राज्यों को इस योजना को अपने-अपने राज्यों में क्रियान्वयन करने की जिम्मेदारी सौंपी। बिहार राज्य में भी इस योजना को अपने-अपने राज्यों में क्रियान्वयन की ~~जिम्मेदारी सौंपी~~ के क्रियान्वयन की जिम्मेदारी विभाग को सौंपी। इसके बाद से हर योजनाओं में विकलांग बच्चों पर विशेष ध्यान दिए जाने लगे है। उनके लिए अच्छे स्कूलों, सहायक उपकरण और विशेष प्रशिक्षित शिक्षकों का व्यवस्था किए जाने लगा है।

वैज्ञानिक दृष्टि से भी यह साबित हो चुका है कि विकलांग बच्चों को भी अगर सामान्य बच्चों के साथ, सामान्य शिक्षा दिया जाए तो वो भी बेहतर प्रगति कर सकते है इसीलिए इन्हें अवसर देने की जरूरत है।

विभिन्न योजनाओं के बाद भी कुछ चुनौतियों का सामना करना पड़ता है, जो निम्न है—

i) पढ़ाई में पिछड़ा होना—
ii) याददाश्त में कमी होना—
iii) कक्षा में ध्यान नही देना—
iv) तुरंत इनाम पाने की लालसा—
v) असफलता से डरना—
vi) शरीर के अंगों के बीच सामंजस्य नही होना—
vii) आत्मविश्वास का कमी होना—
viii) स्वयं और दूसरों को हानि पहुँचाना—

Scanned by CamScanner

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

Page No.
Date

* विशेष आवश्यकतावाले बच्चे : विविध प्रकार, पहचान के ~~तरि~~ तरीके व सीमाऐं

⇒ निशक्तता के प्रकार

1.) दृष्टि निशक्तता → पूर्ण
→ आंशिक

2.) श्रवण निशक्तता → पूर्ण
→ आंशिक

3.) शारीरिक या अस्ति निशक्तता.
4.) मानसिक निशक्तता
5.) अधिगम अक्षमता
6.) बहुनिशक्तता
7.) ऑटिज्म. (अपने आप में खोये रहना)

⇒ निशक्त बच्चों की पहचान

1.) दृष्टि निशक्तता – आंशिक अंधत्व वाले बच्चे के कुछ बाहरी लक्षण स्पष्ट होते है, जिन्हें हम निम्नलिखित आधार पर पहचान सकते है।

→ आँखों में दिखाई देने वाली विकृती.
→ आँखों को बार-बार मलना
→ बार-बार आँखों का लाल होना
→ पाठ्य सामग्री को बहुत नजदीक से देखना
→ आँखे झपकाना.
→ आँख से ज्यादा देर काम करने पर सर दर्द करना
→ वस्तुओं एवं व्यक्तियों से टकराना.
→ आँख में पानी ज्यार आना
→ शाम में देखने में कठिनाई होना.
→ प्रकाश से दूर रहना
→ श्यामपट्ट के नजदीक बैठना

Scanned by CamScanner

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

2) श्रवण निशक्तता
- तेजी से बोलना
- तेज सुनना
- कान का बहना
- कान में दर्द की शिकायत करना
- कान खुजलाना
- आवाज की ओर सर को झुकाना
- श्रुतिलेख में अधिक गलती करना
- शिक्षक को बात सुनते समय ध्यान-पूर्वक उनका चेहरा देखना
- बोलने में कठिनाई
- शिक्षक निर्देशों को बार-बार दोहराना
- ऊंची आवाज या बहुत धीमी आवाज में बोलना

3) शारीरिक निशक्तता
- शरीर के किसी भाग में विकृती होना
- चलने, बैठने, खड़ा होने में कठिनाई होना
- वस्तुओं को पकड़ने, उठाने में कठिनाई होना
- कलम पकड़ने में नहीं बनना
- जोड़ों में दर्द की शिकायत करना
- झटके से चलना
- शरीर का कोई अंग कटा होना
- लकवा, पोलियो से प्रभावित होना

4) मानसिक निशक्तता
- पढ़ाई-लिखाई में पिछड़ा होना
- याददाश्त में कमी होना
- कक्षा में ध्यान नहीं देना

Scanned by CamScanner

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

तुरंत इनाम पाने की लालसा रखना
असफलता से डरना
शरीर के अंगों के बीच सामंजस्य नही होना।
आत्मविश्वास का कम होना
स्वयं एवं दूसरों को हानि पहुँचाना
एकाग्रता में कमी होना
शिक्षक के साथ संबंध स्थापित नही कर पाना
अधिक अभ्यास की जरूरत
अत्याधिक चंचल होना

5) अधिगम अक्षमता
पढ़ते समय अधिगम (पढ़ने) में परेशानी होना।
शब्दों को छोड़ के पढ़ना या अपने मन से शब्दों को जोड़ देना
खड़ाब लिखावट, शब्दों में उचित अंतर नही।
भाषा का अर्थपूर्ण प्रयोग नही करना।
बोले हुए शब्दों का अर्थ नही समझ पाना
अंकों को गलत पढ़ना, क्रम पलट कर पढ़ना,
ध्यान केंद्रित करने की क्षमता में कमि, अस्थिर, अति चंचल, अनावश्यक कार्य करना

6) बहुनिशक्तता - (एक से अधिक विकलांगता)

7) ऑटिज्म - बच्चा अपने आप में खोया रहता है।

Scanned by CamScanner

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

⇒ निःशक्तता के कारण

1.) जन्म के पूर्व – गर्भ अवस्था के दौरान माँ का स्वास्थ्य स्तर निम्न होना या कुपोषित होना।

II.) जन्म के समय – जन्म के समय बच्चे का देर से होना या बच्चे का कम वजन होना। बलपूर्वक प्रसव कराने या बच्चे को चोट लग जाना।

III.) जन्म के बाद – समय पर टीकाकरण नहीं कराना। बच्चे के स्वास्थ्य पर ध्यान नहीं देना। बच्चे में किसी संक्रमण बिमारी का फैल जाना।

- डिस्लेक्सिया (Dislexia) → पढ़ने ~~लिखने~~ में कठिनाई
- डिसग्राफिया (Disgraphia) → लिखने में कठिनाई
- डिसकैलकुलिया (Discalculia) → गणितीय कौशल में कठिनाई

Scanned by CamScanner

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner